**उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय**

**मनोविज्ञान विभाग**

**डिप्लोमा इन गाइडेंस एंड काउंसलिंग (DGC-24)**

**Guideline forProject /Dissertation**

**परियोजना/लघु शोध हेतु निर्देशिका**

**कोर्स कोड & नाम : DGC-110, परियोजना कार्य**

**परियोजना (DGC-110) कार्य हेतु महत्वपूर्ण तिथियाँ-**

**प्रोजेक्ट के लिए प्रपोजल सबमिट करने की तिथि– 10 मई 2025**

**प्रोजेक्ट सबमिट करने की तिथि–10 जुलाई 2025**

**1. परिचय**

- निर्देशन और परामर्श में डिप्लोमा (Diploma in Guidance and Counselling) मनोविज्ञान विभाग, समाज विज्ञान विद्याशाखा उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा संचालित एक नवोदित एक वर्षीय पाठ्यक्रम है। प्रस्तावित पाठ्यक्रम 40 क्रेडिट का है जिसमें 20-20 क्रेडिट के 2 सेमेस्टर हैं| द्वितीय सेमेस्टर में सभी शिक्षार्थियों के लिए 8 क्रेडिट का एक परियोजना कार्य अनिवार्य रूप से पूर्ण करना है| 300 अंकों का परियोजना कार्य शोध पर आधारित होगा जो कि निर्देशक/पर्यवेक्षक के निर्देशन में किया जाना होगा| शोध कार्य मौलिक एवं शोध विषय पाठ्यक्रम एवं तात्कालिक मनोवैज्ञानिक समस्याओं पर आधारित होगा|निर्देशक एवं शिक्षार्थी द्वारा हस्ताक्षरित शोध रूपरेखा के विभागीय अनुमोदन के उपरांत ही शिक्षार्थी परियोजना कार्य आरम्भ कर सकेगा|

**2. उद्देश्य**

शिक्षार्थी द्वारा सम्पादित शोध कार्य एक स्वतंत्र शोध कार्य है जिसका प्रमुख उद्देश्य शिक्षार्थियों में मनोविज्ञान विशेषकर निर्देशन और परामर्श के क्षेत्रों की प्रमुख समस्याओं को शोध के माध्यम से प्रस्तुत करना और उस समस्या के प्रस्तावित समाधान को खोजने की सोच को विकसित करना है। साथ ही उक्त यह शिक्षार्थियों में किसी विशेष स्थिति का विश्लेषण करने और किसी निष्कर्ष पर पहुंचने में सक्षमता को विकसित करने में सहायक होगा। इसके अतिरिक्त परियोजना कार्य के उद्देश्य-

- वैज्ञानिक पद्धति से मनोविज्ञान की तात्कालिक समस्याओं की जांच करना|
- अनुसंधान कौशल विकसित करना|
- बहु-विषयक अवधारणाओं, मनोवैज्ञानिक उपकरणों और तकनीकों को लागू करने की क्षमता विकसित करना|
- लेखन, प्रस्तुतीकरण, संचार और विश्लेषणात्मक कौशल विकसित करना|
- उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों का उपयोग करना सीखना|

**3. शिक्षार्थियों हेतु आवश्यक निर्देश**

सभी शिक्षार्थियों के लिए अनिवार्य रूप से एक मार्गदर्शक/पर्यवेक्षक की आवश्यकता होगी जिसके निर्देशन में शिक्षार्थियों को अपना शोध कार्य पूर्ण करना होगा। यद्यपि मार्गदर्शक/पर्यवेक्षक विश्वविद्यालय द्वारा दिए जायेंगे तदापि यदि कोई शिक्षार्थी स्वयं के प्रयासों से किसी अन्य को मार्गदर्शक/पर्यवेक्षक बनाना चाहता है तो इस हेतु विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित पात्रता मानदंड का पूर्ण होना अनिवार्य होगा जो निम्न प्रकार से हैं-

- किसी मान्यता प्राप्त कॉलेज/विश्वविद्यालय स्तर पर कार्यरत मनोविज्ञान में पीएच.डी उपाधि धारक शिक्षक पर्यवेक्षक हो सकता है|
- शोध प्रस्ताव प्रस्तुत करते समय शिक्षार्थी को पर्यवेक्षक द्वारा विधिवत हस्ताक्षरित इन पर्यवेक्षकों का बायोडाटा एवं सहमति पत्र प्रस्तुत करना होगा| विभाग द्वारा शोध प्रस्ताव के अनुमोदन के उपरांत ही शिक्षार्थी अपना शोध कार्य शुरू करेगा|
- पर्यवेक्षक/गाइड को प्रत्येक परियोजना के लिए विश्वविद्यालय नियमानुसार पारिश्रमिक दिया जाएगा जिसके लिए वह विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित प्रारूप का उपयोग करके प्रोजेक्ट निर्देशन पारिश्रमिक के लिए दावा कर सकता है।
  परियोजना कार्य का मूल्यांकन शोध रिपोर्ट एवं मौखिकी पर आधारित होगा| परियोजना कार्य संबंधी पूर्ण विवरण कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय की वेबसाइट में दिया जाएगा|
- एक मार्गदर्शक/पर्यवेक्षक एक शैक्षणिक अवधि में अधिकतम 5 शिक्षार्थियों का ही निर्देशन/पर्यवेक्षण कर सकता है।

**4. मार्गदर्शक/पर्यवेक्षक की भूमिका**

- शिक्षार्थियों को विषय चयन के संबंध में निर्देशन प्रदान करना।
- शिक्षार्थियों को उन संभावित स्रोतों से सम्बंधित निर्देशन प्रदान करना जहाँ से एक शिक्षार्थी शोध से सम्बंधित तथ्य एकत्र कर सके।
- शिक्षार्थियों को यथासमय और जब भी आवश्यकता हो आवश्यक सहायता प्रदान करना।
- शिक्षार्थियों में शोध की नैतिकता को बनाये रखने के लिए प्रोत्साहित करना अनुसंधान कार्य करते समय और परियोजना रिपोर्ट लिखते समय शिक्षार्थी को नैतिक दिशानिर्देशों का पालन करने के लिए निर्देशित करना।

**5. शोध प्रस्ताव का निरूपण और प्रस्तुतीकरण**

- शोध प्रस्ताव को किसी भी शोध कार्य का अहम् भाग माना गया है। अत: शोध कार्य को शुरू करने से पूर्व शिक्षार्थियों को अपने मार्गदर्शक/पर्यवेक्षक के निर्देशन के उपरांत और स्वयं रुचि के आधार पर एक विषय क्षेत्र चुनेंगे।
- शिक्षार्थियों के लिए आवश्यक है कि वे चयनित शोध विषय को विभिन्न आयामों पर रखकर उसकी तार्किकता को निर्धारित कर लें।
- शोध कार्य निर्धारित समयावधि के अन्दर ही पूर्ण कर किया जाना होगा|
- सुनिश्चित करें कि शोध कार्य के उद्देश्य विशिष्ट, परीक्षण करने योग्य हों। इसके लिए शिक्षार्थी अध्ययन/साहित्य समीक्षा कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त इंटरनेट पर उपलब्ध विभिन्न पत्रिकाओं, पुस्तकों और सूचनाओं का संदर्भ लिया जा सकता है जो एक शिक्षार्थी को अपने विषय को बेहतर तरीके से समझने में मदद करेगा और परिचय, साहित्य की समीक्षा और शोध पद्धति लिखने में भी मदद करेगा।
- सभी शिक्षार्थियों को अपना शोध प्रस्ताव को हिंदी/अंग्रेजी में लिख सकते है। इस सन्दर्भ में शिक्षार्थियों निम्न बिन्दुओं पर अनिवार्य रूप से विचार करना होगा-

- हिंदी भाषा में शोध प्रस्ताव कोकिला फॉन्ट में ए4 आकार के पेपर पर टाइप होना चाहिये। सभी मुख्य बिंदु का आकार 16 तो शेष का आकार 14 तो वही लाइनों के मध्य का अंतर 1.5 होना चाहिए।
- अंग्रेजी भाषा में शोध प्रस्ताव टाइम्सन्यूरोमन में ए4 आकार के पेपर पर टाइप किया जाना चाहिए। सभी मुख्य बिंदु का आकार 14 तो शेष का आकार 12 तो वही लाइनों के मध्य का अंतर 1.5 होना चाहिए।
- शोध प्रस्ताव अधिकतम न्यूनतम 15 अधिकतम 20 पेज में होना चाहिए|

- शिक्षार्थियों को शोध नैतिकता का पालन करना अनिवार्य है|

**6. शोध प्रस्ताव और शोध प्रबंध की रुपरेखा**

सभी शिक्षार्थियों को अपने शोध प्रस्ताव और शोध प्रबंध को बनाते समय कुछ बिन्दुओं को ध्यान में रखना आवश्यक रहेगा जो निम्न प्रकार से है-

- **शीर्षक पृष्ठ:**पहले पृष्ठ पर परियोजना का शीर्षक, शिक्षार्थी का नाम, नामांकन संख्या, अध्ययन केंद्र, वर्ष और मार्गदर्शक/पर्यवेक्षक का नाम अंकित होना चाहिए|

सभी शिक्षार्थियों को अपने शोध प्रस्ताव और शोध प्रबंध को मुख्यत: पांच भागों में निम्न प्रकार से विभक्त करना होगा-

- **अध्याय 1 परिचय:**इस अनुभाग में शिक्षार्थी द्वारा चुने गए विषय का परिचय, सम्बंधितचरों का संक्षिप्त विवरण, अध्ययन का औचित्य, विषय चयन की प्रासंगिकता का विवरण दिया जाएगा|

- **अध्याय 2 साहित्य की समीक्षा:**साहित्य की समीक्षा पूर्व के शोधकर्ताओं द्वारा किए गए कार्यों का एक सामूहिक निकाय है जो कि शोध ग्रंथों, पुस्तकों, पत्रिकाओं, लेखों आदि के रूप में प्रकाशित होती है। यह विचारों को उत्पन्न करने और शोध कार्य के लिए महत्वपूर्ण प्रश्न विकसित करने में मदद करती है। इस अनुभाग में, आप अपने शोध कार्य से संबंधित विभिन्न अध्ययनों को व्यवस्थित तरीके से उद्धृत करेंगे। संबंधित अध्ययनों की समीक्षा मुख्य रूप से लेखक, वर्ष, उद्देश्य, निदर्श एवं निदर्शन, प्रयुक्त उपकरण और निष्कर्षों पर केंद्रित होगी। सन्दर्भ शब्दशः कॉपी नहीं किया जाना चाहिए। साहित्य की समीक्षा प्रवाहमय एवं व्यवस्थित ढंग से लिखी जानी चाहिए, इसका आशय यह है कि आप संबंधित अध्ययनों पर चर्चा कर रहे हैं, न कि केवल इनका उल्लेख कर रहे हैं।

- **अध्याय 3 शोध प्रविधि:**शोध प्राविधि में अनुसंधान समस्या, उद्देश्य, परिकल्पना/प्रयुक्त चरों की संक्रियात्मक परिभाषा, निदर्श, अनुसंधान डिजाइन, डेटा संग्रह के लिए परीक्षण/उपकरण और डेटा विश्लेषण तकनीक शामिल हैं। समस्या और उद्देश्य विशिष्ट और स्पष्ट रूप से लिखे जाने चाहिए। जहां भी लागू हो परिकल्पनाएं तैयार की जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त अनुसंधान डिजाइन साथ ही सम्बंधितडेटा संग्रह के लिए परीक्षण/उपकरणों का विवरण किया जाना होगा।

- **अध्याय 4 आंकड़ों का संग्रह एवं विश्लेषण:**अंतिम रूप से तैयार शोध प्रबंध में उन तकनीक का उपयोग परीक्षणों/उपकरणों का विवरण होगा जिनकी सहायता से प्राप्त डेटा का विश्लेषण किया गया हो।

- **अध्याय 5 खोज, निष्कर्ष और सुझाव**

- **सन्दर्भ: (एपीए शैली):**सन्दर्भों को एपीएप्रारूप में लिखा जाना होगा। इन्हें वर्णानुक्रम में सूचीबद्ध किया जाना चाहिए। विभिन्न स्रोतों से लिए गए अध्ययनों का सन्दर्भ निम्न प्रकार दिया जाना होगा।

**पुस्तकों से लिया गया पाठ**

- अनास्तासी, ए. (1968)। मनोवैज्ञानिक परीक्षण. लंदन: मैकमिलनपब्लिशर्स लिमिटेड

**जर्नल:**

- डेनिसन, बी. (1984)। कॉर्पोरेट संस्कृति को निचले स्तर पर लाना। संगठनात्मक गतिशीलता, 13, 22-24.

**पुस्तक अध्याय:**

- खान, ए.डब्ल्यू. (2005)। विकास के लिए दूरस्थ शिक्षा. इन: गर्ग, एस. एट.अल. (सं.) वैश्विक परिवेश में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा: सहयोग के अवसर। नई दिल्ली: विवाबुक्स।

**वेबसाइटें**

- हर्नान्डेज़एम. और बैरिओक (2016,1 अक्टूबर)। सिज़ोफ्रेरिया के साथ परिवार और दवा का उपयोग और लैटिनो का पालन। जर्नल ऑफ़ मेंटल हेल्थ,1-7, http://dx.doi.org/10.1080/ 09638237.2016.122206 से पुनर्प्राप्त, 25.10.16 को एक्सेस किया गया

**7. परिशिष्ट:** परियोजना कार्य संबंधी प्रारूप

**प्रारूप-1**

**घोषणा-पत्र**

मैं.....घोषणा करता/करती हूँ कि मेरा परियोजना कार्य जिसका शीर्षक.....है को मैंने डॉ..... के निर्देशन एवं मार्गदर्शन में सम्पादित किया है । यह परियोजना कार्य मेरा मौलिक प्रयास है एवं इस संस्था(UOU) के अतिरिक्त यह कार्य किसी अन्यत्र संस्था में प्रस्तुत नहीं किया गया है। प्रस्तुत परियोजना कार्य प्रथम बार डिप्लोमा इन गाइडडेंस एंड कॉउंसलिंग (DGC-24) के अन्तिम सेमेस्टर की आंशिक अभिपूर्ति हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है।

दिनांक :
स्थान :
हस्ताक्षर :
नामांकन स.:
नाम :
अध्ययन केन्द्र :
पता:

**प्रारूप-2**

**प्रमाण पत्र**

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/सुश्री …….. उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय (यूओयू) हल्द्वानी से डिप्लोमा (DGC) के छात्र ने डिप्लोमा पाठ्यक्रम DGC -24 के लिए अपने प्रोजेक्ट कार्य मेरे पर्यवेक्षण और मार्गदर्शन में पूर्ण किया है। उनका प्रोजेक्ट कार्य जिसका शीर्षक .....है| इनका कार्य वास्तविक और मौलिक है। अवलोकन एवं निरीक्षण के पश्चात् मैं इनके लघु शोध को अग्रसारित करता/ करती हूँ।

हस्ताक्षर निर्देशक :

नाम:

पता:

फोन न.&मेल आई डी:

दिनांक:

स्थान :